

उपदेश टाइम्स

कानपुर से प्रकाशित एवं कानपुर, उन्नाव, लखनऊ, गोरखपुर, जौनपुर, फिरोजाबाद, जालौन उर्दू, कन्नौज, फर्रुखाबाद, एटा में प्रसारित

कानपुर, सोमवार 12 फरवरी 2024

पृष्ठ : 8

चने की फसल को कीड़ों से बचाने के लिए किसान करें प्रबंधन: डॉ अजय कुमार सिंह



कानपुर नगर उपदेश टाइम्स

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में दिलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉक्टर अजय कुमार सिंह ने चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाए किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि चना देश में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसमें कैल्शियम, आयरन, विटामिन और कार्बोहाइड्रेट पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। शरीर में होने

वाली रक्त की कमी, कब्ज, मधुमेह और पीलिया जैसे रोगों में चना बहुत असरकारक सिद्ध होता है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि प्रदेश में चने का क्षेत्रफल लगभग

627 हजार हेक्टेयर है। उन्होंने बताया कि चने की फसल में यदि फली छेदक कीट का नियंत्रण समय पर नहीं किया जाता है तो पैदावार में लगभग 50 से 60% तक का नुकसान हो जाता है। डॉक्टर अजय कुमार सिंह ने कहा कि चने का फली छेदक कीट शुरुआत में पत्तियों को खाता है। इसके बाद फली लगने पर उन में छेद कर दानों को खोखला कर देता है। इससे दाना नहीं बन पाता व फसल खराब हो जाती है। उन्होंने इसके जैविक नियंत्रण हेतु किसानों को सलाह दी है कि फरवरी माह में 5 से 6 फेरोमेन ट्रेप प्रति हेक्टेयर

लगा दे। एक या एक से अधिक फली छेदक कीट की तितलियां आने पर दवा का छिड़काव करना है। इसके लिए चना फसल में 50% फूल आने पर एनपीबी 250 एल.ई.एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें। 15 दिन बाद बीटी 750 मिली लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें अथवा 50% फूल आने पर 700 मिलीलीटर नीम का तेल प्रति हेक्टेयर घोल बनाकर छिड़काव कर दें। डॉक्टर सिंह ने बताया कि रासायनिक नियंत्रण के लिए इंडोक्साकार्ब 14.3 एससी एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी 0.5 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। जिससे चने की फसल सुरक्षित रहेगी व किसान को बाजार भाव भी अच्छा मिलेगा।



12,02, 2024 jksingh.hardoi@gmail.com मोबाइल नंबर 9956834016

कानपुर वरिष्ठ पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

चना की फसल को कीड़ों से बचाए किसान, करें प्रबंधन: डॉ अजय कुमार सिं



ने बताया कि प्रदेश में चने का क्षेत्रफल लगभग 627 हजार हेक्टेयर है। उन्होंने बताया कि चने की फसल में यदि फली छेदक कीट का नियंत्रण समय पर नहीं किया जाता है तो पैदावार में लगभग 50 से 60% तक का नुकसान हो जाता है। डॉक्टर अजय कुमार सिंह ने कहा कि चने का फली छेदक कीट शुरुआत में पत्तियों को खाता है। इसके बाद फली लगने पर उन में छेद कर दानों को खोखला कर देता है। इससे दाना नहीं बन पाता व फसल खराब हो जाती है। उन्होंने इसके जैविक नियंत्रण हेतु किसानों को सलाह दी है कि फरवरी माह में 5 से 6 फेरोमेन ट्रैप प्रति हेक्टेयर लगा दे। एक या एक से अधिक फली छेदक कीट की तितलियां आने पर दवा का छिड़काव करना है। इसके लिए चना फसल में 50% फूल आने पर एनपीबी 250 एल.ई.एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें। 15 दिन बाद बीटी 750 मिली लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें अथवा 50% फूल आने पर 700 मिलीलीटर नीम का तेल प्रति हेक्टेयर घोल बनाकर छिड़काव कर दें। डॉक्टर सिंह ने बताया कि रासायनिक नियंत्रण के लिए इंडोक्साकार्ब 14.3 एससी एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी 0.5 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। जिससे चने की फसल सुरक्षित रहेगी व किसान को बाजार भाव भी अच्छा मिलेगा।



4:02 pm



4:02 pm



4:02 pm

वरिष्ठ पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में आज दिलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉक्टर अजय कुमार सिंह ने चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाए किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि चना देश में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसमें कैल्शियम, आयरन, विटामिन और कार्बोहाइड्रेट पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। शरीर में होने वाली रक्त की कमी, कब्ज, मधुमेह और पीलिया जैसे रोगों में चना बहुत असरकारक सिद्ध होता है। डॉक्टर सिंह



समाज का साथी

कानपुर नगर से प्रकाशित

कानपुर, सोमवार 12 फरवरी-2024

पृष्ठ -8

चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाएं किसान: डॉ. अजय

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में आज दिलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉक्टर अजय कुमार सिंह ने चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाए किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि चना देश में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसमें कैल्शियम, आयरन, विटामिन और कार्बोहाइड्रेट पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। शरीर में होने वाली रक्त की कमी, कब्ज, मधुमेह और पीलिया जैसे रोगों में चना बहुत असरकारक सिद्ध होता है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि प्रदेश में चने का क्षेत्रफल लगभग 627 हजार हेक्टेयर है। उन्होंने बताया कि चने की फसल में यदि फली छेदक कीट का नियंत्रण समय पर नहीं किया जाता है तो पैदावार में लगभग 50 से 60%

तक का नुकसान हो जाता है। डॉक्टर अजय कुमार सिंह ने कहा कि चने का फली छेदक कीट शुरुआत में पत्तियों को खाता है। इसके बाद फली लगने पर उन में छेद कर दानों को खोखला कर देता है। इससे दाना नहीं बन पाता व फसल खराब हो जाती है। उन्होंने इसके जैविक नियंत्रण हेतु किसानों को सलाह दी है कि फरवरी माह में 5 से 6 फेरोमेन ट्रेप प्रति हेक्टेयर लगा दे। एक या एक से अधिक फली छेदक कीट की तितलियां आने पर दवा का छिड़काव करना है। इसके लिए चना फसल में 50 ल फूल आने पर एनपीबी 250 एल.ई. एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें। 15 दिन बाद बीटी 750 मिली लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें अथवा 50 ल फूल आने पर 700 मिलीलीटर नीम का तेल प्रति हेक्टेयर घोल बनाकर छिड़काव कर दें। डॉक्टर सिंह ने बताया

कि रासायनिक नियंत्रण के लिए इंडोक्साकार्ब 14.3 एससी एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी 0.5 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

समाज का साथी

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
शाहनाज परवीन मुस्तफाई प्रेस
96/72 केनालगंज, कानपुर से
मुद्रित तथा 14/80, सिविल
लाइन, कानपुर से प्रकाशित
सम्पादक मो0 वहीद

7571088215

विधि सलाहकार धीरज कुमार
वर्मा -एडवोकेट मो0:-
8960772900

चीफ एडिटर- मो0 अली
मोबाइल नं0-7571088215
उप संपादक -दानिश अली
मोबाइल नं0-8299005726
सिटी इंचार्ज-मो0 सुफियान
मोबाइल नं0-9026849483

लेखों के लिए समाचार पत्र उत्तरदायी नहीं है। समस्त विवाद प्रकाशन के 30 दिनों के अंदर कानपुर न्यायालय में मान्य होंगे।

चना की फसल को कीड़ों से बचाए किसान, दवा का छिड़काव आवश्यक

कानपुर, 11 फरवरी। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में आज दिलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉक्टर अजय कुमार सिंह ने चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाने को किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि चना देश में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसमें कैल्शियम, आयरन, विटामिन और कार्बोहाइड्रेट पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। शरीर में होने वाली रक्त की कमी, कब्ज, मधुमेह और पीलिया जैसे रोगों में चना बहुत असरकारक सिद्ध होता है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि प्रदेश में चने का क्षेत्रफल लगभग 627 हजार हेक्टेयर है। उन्होंने बताया कि चने की फसल में यदि फली छेदक कीट का नियंत्रण समय पर नहीं किया जाता है तो पैदावार में लगभग 50 से 60 प्रतिशत तक का नुकसान हो जाता है। डॉ. अजय कुमार सिंह ने कहा कि चने का फली छेदक कीट शुरुआत में पत्तियों को खाता है। इसके बाद फली

लगने पर उनमें छेद कर दानों को खोखला कर देता है। इससे दाना नहीं बन पाता व फसल खराब हो जाती है। उन्होंने इसके जैविक नियंत्रण हेतु किसानों को सलाह दी है कि फरवरी माह में 5 से 6 फेरोमेन ट्रेप प्रति हेक्टेयर लगा दे। एक या एक से अधिक फली छेदक कीट की तितलियां आने पर दवा का छिड़काव करना है। इसके लिए चना फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर एनपीबी 250 एल.ई.एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें। 15 दिन बाद बीटी 750 मिली लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें अथवा 50 प्रतिशत फूल आने पर 700 मिलीलीटर नीम का तेल प्रति हेक्टेयर घोल बनाकर छिड़काव कर दें। डॉक्टर सिंह ने बताया कि रासायनिक नियंत्रण के लिए इंडोक्साकार्ब 14.3 एससी एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी 0.5 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। जिससे चने की फसल सुरक्षित रहेगी व किसान को बाजार भाव भी अच्छा मिलेगा।

दैनिक

RNI No.- UPHIN/2007/27090

नगर छाया

आप की आवाज़....

www.nagrabhaya.com

विवेक मिश्र एडवोकेट का आयुर्वा रहीं।

चने की फसल को कीड़ों से बचाए किसान, करें प्रबंधन: डॉ. अजय कुमार सिंह

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में दिलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉक्टर अजय कुमार सिंह ने चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाए किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि चना देश में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसमें कैल्शियम, आयरन, विटामिन और कार्बोहाइड्रेट पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। शरीर में होने वाली रक्त की कमी, कब्ज, मधुमेह और पीलिया जैसे रोगों में चना बहुत असरकारक सिद्ध होता है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि प्रदेश में चने का क्षेत्रफल लगभग 627 हजार



हेक्टयर है। उन्होंने बताया कि चने की फसल में यदि फली छेदक कीट का नियंत्रण समय पर नहीं किया जाता है तो पैदावार में लगभग 50 से 60 प्रतिशत तक का नुकसान हो जाता है। डॉक्टर अजय कुमार सिंह ने कहा कि

चने का फली छेदक कीट शुरुआत में पत्तियों को खाता है। इसके बाद फली लगने पर उन में छेद कर दानों को खोखला कर देता है। इससे दाना नहीं बन पाता व फसल खराब हो जाती है। उन्होंने इसके जैविक नियंत्रण हेतु किसानों को सलाह दी है कि फरवरी माह में 5 से 6 फेरोमोन ट्रेप प्रति हेक्टयर लगा दे। एक या एक से अधिक फली छेदक कीट की तितलियां आने पर दवा का छिड़काव करना है। इसके लिए चना फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर एनपीबी 250 एल.ई.एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें। 15 दिन बाद बीटी 750 मिली लीटर प्रति हेक्टयर की दर से छिड़काव करें अथवा 50 प्रतिशत फूल आने पर 700 मिलीलीटर नीम का तेल प्रति



हेक्टयर घोल बनाकर छिड़काव कर दें। डॉक्टर सिंह ने बताया कि रासायनिक नियंत्रण के लिए इंडोक्साकार्ब 14.3 एससी एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी 0.5 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। जिससे चने की फसल सुरक्षित रहेगी व किसान को बाजार भाव भी अच्छा मिलेगा।

रहस्य संदेश

संस्करण एवं एटा से प्रकाशित, सोमवार, 12 फरवरी 2024

RNI-NO. UPHIN/2007/20715

पेज: 7

चना की फसल को कीड़ों से बचाए किसान, करें प्रबंधन: डॉ अजय कुमार सिंह



अनवर अशरफ -कानपुर :चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में आज दिलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉक्टर अजय कुमार सिंह ने चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाए किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि चना देश में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसमें कैल्शियम, आयरन, विटामिन और कार्बोहाइड्रेट पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। शरीर में होने वाली रक्त की कमी, कब्ज, मधुमेह और पीलिया जैसे रोगों में चना बहुत असरकारक सिद्ध होता है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि प्रदेश में चने का क्षेत्रफल लगभग 627 हजार हेक्टेयर है। उन्होंने बताया कि चने की फसल में यदि फली छेदक कीट का नियंत्रण समय पर नहीं किया जाता है तो पैदावार में लगभग 50 से 60% तक का नुकसान हो जाता है। डॉक्टर अजय कुमार सिंह ने कहा कि चने का फली छेदक कीट शुरूआत में

पत्तियों को खाता है। इसके बाद फली लगने पर उन में छेद कर दानों को खोखला कर देता है। इससे दाना नहीं बन पाता व फसल खराब हो जाती है। उन्होंने इसके जैविक नियंत्रण हेतु किसानों को सलाह दी है कि फरवरी माह में 5 से 6 फेरोमोन ट्रैप प्रति हेक्टेयर लगा दे। एक या एक से अधिक फली छेदक कीट की तितलियां आने पर दवा का छिड़काव करना है। इसके लिए चना फसल में 50% फूल आने पर एनपीबी 250 एल.ई.एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर दें। 15 दिन बाद बीटी 750 मिली लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें अथवा 50% फूल आने पर 700 मिलीलीटर नीम का तेल प्रति हेक्टेयर घोल बनाकर छिड़काव कर दें। डॉक्टर सिंह ने बताया कि रासायनिक नियंत्रण के लिए इंडोक्साकार्ब 14.3 एससी एक मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी 0.5 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। जिससे चने की फसल सुरक्षित रहेगी व किसान को बाजार भाव भी अच्छा मिलेगा।